National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 12-05-2019; Accepted: 21-06-2019
www.nationaljournals.com
Volume 4; Issue 3; July 2019; Page No. 28-30

रेणु जी के उपन्यासों में यथार्थ : बोध

डॉ० दयानिधि सा
सहायक प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, महात्मा गांधी स्नातक महाविद्यालय, भुक्ता, जि..बरगढ़, ओड़िशा, भारत।

प्रस्तावना

'मैला आंचल' हिन्दी का वह पहला आंचलिक उपन्यास है, जो पूर्णिया जिला के मेरीगंज ही नहीं पूरे अंचल के आंचल को देश भर में फैलाया था। वह आंचल मैला ही सही, पर पूरे देश में पूर्णिया की सच्ची तस्वीर खड़ी करके लोगों का ध्यान आकृष्ट किया गया है। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में यह क्रान्ति कारी कार्य था जो किसी अंचल विशेष को लेकर, वहां के जन समूह को लेकर कोई उपन्यास लिखा गया हो। 'मैला आंचल' का प्रकाशन–लोकार्पण पटना में रेणु जी को हाथी पे सवार कर इतने भव्याकर्षक ढंग से किया गया था कि पूरा बिहार प्रान्त ही नहीं पूरा देश इस अभिनव उपन्यास और उपन्यासकार दोनों से परिचित हो गया था। यह उपन्यास मेरीगंज की वह तस्वीर खींचता है, जहां गांव की सांस्कृतिक धरोहर स्वतः उद्भासित होने लगता है। मेरीगंज का मैला आंचल हमें वहां की संस्कृति से सीधा संवाद कराता है, गांव की आत्मा से भेंट कराता है, सांस्कृतिक भाव–स्पन्दन जगाता है।

'मैला आंचल' की पृष्ठभूमि में रेणु जी लिखते हैं–''यह है 'मैला आंचल' एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है। इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा–रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में सन्थाल परगना और मानकर– इस उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी है शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरुपता भी– मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''[1]

मेरीगंज यहां पूर्णिया जिला के अनुन्नत पिछड़े हुए गांव का प्रतीक है, वहां अनेक गांव हो सकते हैं, जहां फूल–शूल–धूल है, जहां गुलाब–चन्दन की सुन्दरता भी है, कीचड़ की कुरुपता भी। डॉ. प्रशान्त भी एक प्रतीक है जो ग्रामोद्धार अभियान को सार्थक बनाने के लिए मेरीगंज को अपना कर्म–क्षेत्र चुनता है। वह रुस की विदेश यात्रा ठुकरा कर मेरीगंज के मैला आंचल को धूलने–साफ करने, बेदाग– स्वच्छ करने का बीड़ा उठाता है। उस इलाकों में डॉ. प्रशान्त जैसे सैकड़ों–हजारों नौजवान हो सकते हैं, जो अपने अंचल के सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य को साफ–सुथरा स्वच्छ करने का अभियान खड़ा कर सकते हैं। प्रशान्त के उन्नत संस्कार, ग्रामोद्धार तथा देशोद्धार के उच्च विचार उसे मेरीगंज की तरफ खींच लाते हैं और वहां के आंचल के मैल को साफ करके ही चैन की सांस लेता है। गांधीजी का ग्रामोद्धार आभियान उपन्यास में साकार हो उठा है।

'मैला आंचल' दो भागों में बंटा हुआ है। पहले भाग में मेरीगंज के सभी मुहल्लों–टोलियों के बीच आत्म संघर्ष, डॉ. प्रशान्त का मेरीगंज में स्वास्थ्य केन्द्र खोलना, मेरीगंज के धार्मिक मठ में मठ–महन्तों का व्यभिचार आदि का चित्रण है। दूसरे भाग में स्वतन्त्रता प्राप्ति से देश–निर्माण के अभियान, गांधीजी की हत्या, प्रशासनिक अधिकारी, राजनेताओं, कांग्रेस, सोशालिष्ट पार्टी के कार्यकताओं के भ्रष्ट आचरण का जीवन्त चित्र खींचा गया है। मेरीगंज गांव अंग्रेज अधिकारी डब्लू. जी. मार्टिन की पत्नी मेरी के नाम से मेरीगंज नाम रखा गया है। रोहतट स्टेशन से सात कोस पूर्व दिशा में कोसी नदी पार करके पड़ता है– गांव मेरीगंज। डॉक्टरी इलाज के अभाव में मेरी की मौत हो गई थी, तभी से मार्टिन ने गांव में एक डिस्पेन्सरी खोलने के लिए ऐड़ी–चोटी एक कर दिया था। मेरी की अचानक मौत से मार्टिन पागल हो गया और रांची के पागलखाने में ही उसकी मौत हो गई थी।

मेरीगंज गांव कई टोलियों में बंटा हुआ है। ब्राह्मण टोली, तन्त्रिमा टोली, संथाल टोली, यादव टोली आदि के रुप में कई टोलियां हैं, जिनके बीच हमेशा संघर्ष चलता रहता है। गांव में एक पुराना मठ है, जहां कई पुराने मठाधीश तपश्चर्या में नियोजित हैं। महन्त रामदास, सेवादास, बावनदास जैसे महन्त धर्म की आड़ में लोगों के शारिरिक–मानसिक शोषण में पारंगत हैं। उस मठ में कार्यरत महिलाओं, दासिओं का यौन शोषण करके अपनी कामुक भूख मिटाते हैं।

यादव टोली का किसनू उन महन्तों की काली करतूतों का पर्दाफाश करता हुआ लिखता है–''अन्धा महन्त अपने पापों का प्राच्छित कर रहा है। बाबाजी होकर जो रखेलिन रखता है, वो बाबाजी नहीं। उपर बाबाजी भीतर दगा बाजी। कहां वह बच्ची और कहां पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध। रोज रात में लक्ष्मी रोती थी– ऐसा रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाए। हम तो सो नहीं सकते थे। उठ कर भैंसों को खोलकर चराने चले जाते थे। रात में रोने का कारण पूछने पर चुप चाप टुकुर–टुकुर मुंह देखने लगती थी..... ठीक गाय की बाछी की तरह, जिसकी मां मर गई हो.....। वैसा ही चाण्डाल है राम दसवा।''[2]

मेरीगंज में गांधीवादी व्यक्ति बालदेव गांव के आंचल के मैलेपन को मिटाना चाहता है। वह गांव में शान्ति–सद्भाव, बन्धुत्वभाव की स्थापना करके लोगों का जीवन–उत्कर्ष साधित करना चाहता है। गांव के अशिक्षित, अज्ञानी, अन्ध विश्वासी लोगों में शिक्षा–ज्ञान, उन्नत संस्कार का बीजारोपण करके गांव की काया पलट करना चाहता है। शहर से डाक्टरी पढ़ाई करके गांव–देहात में रह कर गरीबों ग्रामीणों की सेवा करने का लक्ष्य लेकर डॉ. प्रशान्त मेरीगंज में आता है। 'आदर्श आश्रम' की सेविका स्नेहमयी को उसके पति डॉ. अनिल कुमार बनर्जी ने त्याग कर एक नेपालीन युवती से शादी कर ली थी। स्नेहमयी की आकस्मिक मौत के बाद बनारस वासी किसी महिला ने उनका लालन–पालन किया। अचानक काशी की गलियों में कहीं उनकी पालित माता भी गायब हो गई। फिर प्रशान्त लावारिस बच्चे की तरह पढ़–लिख कर, तकलीफ झेलकर डाक्टर बने हैं। उसके आगे–पीछे अब कोई नहीं है।

सन 1942 में गांधीजी द्वारा ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' का देशव्यापी जन आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। देश भर में अंग्रजों के खिलाफ विराट पैमाने पर आन्दोलन खड़े किए गए। 1946 में कंग्रेसी मंत्रि मण्डल का गठन हुआ। प्रशान्त हेल्थ मिनिस्टर के बंगले में जाकर पूर्णिया के किसी गांव में मलेरिया और काला–आजार जैसी खतरनाक बीमारी पर रिसर्च करने की बात करते हैं। मिनिस्टर साहब बताते हैं कि सरकार उन्हें स्कॉलरशीप के साथ विदेश रुस भेजना चाहती है रिसर्च के लिए है। डॉ.

प्रशान्त अपनी मनसा इन शब्दों में व्यक्त करते हैं– ''जी, मैं विदेश नहीं जाउंगा। मैं इसी नक्से के किसी हिस्से में रहना चाहता हूं। यह देखिए, यह है सहरसा का वह हिस्सा, जहां हर साल कोसी का ताण्डव नृत्य होता है। और यह पूर्णिया का पूर्वी अंचल जहां मलेरिया और काला–आजार हर साल मृत्यु की बाढ़ ले आते हैं।''[3]

डॉ. प्रशान्त मेरीगंज में आकर गांव के लोगों को मलेरिया और काला–आजार के घातक परिणाम और उससे बचने के उपायों की जानकारी देते हैं। पहले पहल तो गांव के लोग उनकी बातों पर विश्वास नहीं करते, अपने पुराने नुस्खे से ही मलेरिया जैसी बीमारी पर काबू पाना चाहतें हैं, पर धीरे–धीरे वे डॉक्टर की बातों पर विश्वास करने लगते हैं और उनसे इलाज करवाकर मलेरिया काला आजार से छुटकारा पाते हैं। बालदेव, कालीचरण, कमली जैसे उंचे खयालात के लोग प्रशान्त का साथ देते हैं। गांव में हेल्थ सेन्टर खुलवाकर लोगों की जाने बचाते हैं। होली के अवसर पर डॉक्टर साहब गांव वालों के साथ उनके रंगों में रंग कर होली खेलना चाहते हैं, गांव के सात्विक परिवेश में घुल मिल जाना चाहते हैं।

डॉ. प्रशान्त और कमली एक–दूसरे के प्रति समर्पित हैं। कमली अब प्रशान्त के बच्चे की मां बनने जा रही है। प्रशान्त का बच्चा कमली के पेट में पल रहा है। पूरे गांव में इसकी चर्चा होने लगी है। प्रशान्त कुछ काम के लिए शहर गए हुए हैं। जैसे ही कमली का खत मिलता है, प्रशान्त ममता के साथ गांव की ओर निकल पड़ते हैं। कमली एक बच्चे को जन्म देती है, जो बड़ा सुन्दर, बड़ा प्यारा है– नीलू, नीलोत्पल। प्रशान्त अपनी पत्नी कमली और नवजात शिशु के साथ पटना जाने की तैयारी करते हैं। क्योंकि यहां उनका मिशन खत्म हो गया है। मलेरिया और काला–आजार को जड़ से खत्म कर दिया गया है। अब गांव के लोग सुखद–स्वस्थ जीवन जीने लगे हैं।

गांव में आत्म कैन्द्रिक भावना तथा स्वार्थी मनोवृत्ति के शिकार लोग आपसी हिंसा, वैमनस्य भाव से ग्रसित हैं। मानवता की भावना लोगों में मिटती जा रही है। फिर भी प्रशान्त आशान्वित भाव से सोचते हैं कि मानवता के पुजारियों की सम्मिलित वाणी फिर से आसमान में गुंजेगी। अहिंसा, प्रेम, सद्भाव का बीजारोपण यहां की धरती पर हो चुका है, फिर भय किस बात का है। प्रशान्त गांधीजी की रामराज्य की परिकल्पना, भारत की आत्मा–गांव के उद्धार के अभियान को सार्थक बनाने के लिए संकल्पबद्ध है। वह ममता से कहते हैं–''ममता। मैं फिर से काम करुंगा– यही, इसी गांव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूं। आंसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाएंगे। मैं साधना करुंगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के आंचल तले। कम से कम एक ही गांव के कुछ प्राणियों के मुरझाए होठों पर मुस्कुराहट लौटा सकूं, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूं।''[4]

'परती परिकथा' में स्वतन्त्र भारत के स्वप्न और हालात जीवन्त रुप में चित्रित है। उस अंचल विशेष में कृषि–क्रान्ति खड़ा करना लेखक का मूल उद्देश्य है। पूर्णिया अंचल का समृद्ध गांव है– परानपुर। यही गांव इस उपन्यास का केन्द्रबिन्दु है। दुलारीदाय के दोनों बाजुओं में पले सुखी– समृद्ध गांवों का प्राण दुलारीदाय के पूरबी महार पर स्थित लगभग सात–आठ हजार की आबादी वाला गांव– परानपुर। इस गांव की लाखों एकड़ जमीन कोसी की बाढ़ में उसर होकर परती पड़ी हुई है। गांव में अनेक समस्याएं हैं, अनेक बुराइयां हैं, भष्टाचार का गढ़ है यह गांव। इस गांव की कायापलट के लिए नवयुवक जितेन्द्रनाथ आगे आता है। वह जमींदार घराने का युवक है, फिर भी किसानों–मजदूरों का खून चूसने की बजाय उनका उद्धार करना चाहता है। वहां की परती जमीन को सिंचित कर, उपजाउ बनाकर, हरी भरी हरियाली खड़ा करने का सपना देखता है– जितेन्द्रनाथ।

जितेन्द्रनाथ के अन्दर ग्राम संस्कृति के प्रति अपार श्रद्धा है। वह पूरे गांव को एक परिवार तुल्य समझकर गांव का उद्धार करना चाहता है। इसके लिए वह ग्रामीण परिवेश की प्राचीन रुढ़ीवादी परंपरा, भ्रष्ट राजनीति, गांव के लोगों के आपसी कलह, वैमनस्य भाव आदि को दूर करके शान्ति–सद्भाव स्थापित करना चाहता है। गांव के लोग जितेन्द्रनाथ को पागल, अजूबा कहकर मजाक उड़ाते हैं। लुत्तो नामक भ्रष्ट राजनेता से प्रेरित कुछ बदमाश लोग जितेन्द्र को अपमानित करते हैं, उसकी पिटाई तक करते हैं। फिर भी वह हिम्मत नहीं हारता और धैर्य के साथ आगे बढ़ता है, गांव में रुढ़ीवादी दकियानुसी मान्यताओं को हटाकर नए मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है। वह परानपुर के गंवई–अनपढ़ लोगों में आधुनिक कृषि प्रणाली द्वारा कृषि उद्योग के वैज्ञानिक तथा प्रगतिशील कार्यक्रम के जरिए उन्नत बनाने की पहल करता है।

आजादी हासिल होने के बाद देश भर में ग्रामोद्धार अभियान चलाए जाते हैं। ग्रामीण किसान–मजदूरों की जमीन की समस्या के हल के लिए सरकार की ओर से लैण्ड सेटलमेन्ट सर्वे किए जाते हैं। पूर्णिया जिले में लैण्ड सर्वे ऑपरेशन के आने से लोगों में खलबली मच जाती है। गांव की हंसी–खुशी गायब हो जाती है। जितेन्द्र इस ऑपरेशन को सकारात्मक रुप से ग्रहण करता है। उसके प्रयास से परती जमीन के प्रति लोगों का अन्ध विश्वास, रुढ़ियां, पुराने संस्कार खत्म होते हैं। इस बदलाव के साथ ही गांव की संस्कृतिक चेतना को नई उर्जा मिलती है, सांस्कृतिक एकता–अखण्डता को मजबूती मिलती है, लोगों में आधुनिक खयालात पैदा होने लगते हैं। आधुनिक संयत्रों के सहारे कृषि कार्य करके न केवल गांव की आर्थिक धुरी को मजबूती मिलती है, बल्कि सांस्कृतिक चेतना भी उत्कर्ष की ओर अग्रसरित होती है।

'परती परिकथा' की प्रगतिशील चेतना के बारे में शिवनारायण श्रीवास्तव जी लिखते हैं, ''समय सन् 1955 के आसपास का है। विभिन्न ग्राम सुधार एवं विकास की योजनाएं, जमींदारी उन्मूलन, लैण्ड सर्वे ऑपरेशन, कोसी योजना आदि कार्यान्वित की जा रही हैं। इन सबके प्रति गांव वालों की प्रतिकूल प्रतिक्रिया किसानों और भूमिहीनों का महाभारत, एक–एक इंच जमीन के लिए सिर फुटोंवल, पंचायत, मुकदमेबाजी कागज में अपना–अपना नाम दर्ज कराने की अधीरता, नक्सा बन जाने के पहले ही अपनी–अपनी भूमि–सीमा सुरक्षित कर लेने की चिन्ता, नारा–जुलूस, गाली–गलौज, स्त्रियों के लड़ाई–झगड़े, गांव की लोक कथा, लोक गीत, जात्रा– नाटक आदि के व्योवेवार चित्रण द्वारा परानपुर गांव को प्रत्यक्ष करने का प्रयत्न किया गया है।''[5]

जितेन्द्रनाथ ढहते हुए सामन्ती युग का प्रतिनिधित्व करनेवाला सशक्त पात्र है। जितेन्द्र के पिता शिवेन्द्र मिश्र सामन्ती युग के पक्षभर हैं। जमींदारी उन्मूलन जमीन भाव क्रान्ति के विसंगति–पूर्ण परिवेश का सजीव चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। इस सम्बन्ध में विवेकी रॉय लिखते हैं–''भारतवर्ष में कृषि क्रान्ति का आरंभिक बिन्दु जमींदारी उन्मूलन है। भू–विकास और आर्थिक कार्यक्रमों को लागू करने के सन्दर्भ में इस क्रान्तिकारी और प्रगतिशील कदम को जिस निर्णायक रुप में उठाया गया तथा परंपरावादी गांव ने किस विरोधी स्तर पर इसे लिया, इसका चित्रण रेणु ने मात्र सूचनात्मक पद्धति पर न कर मूल्यवान रचनात्मक संकेतों में किया है।''[6]

आजादी के कुछ वर्ष बाद बिहार के पूर्णिया जिले में लैण्ड सर्वे ऑपरेशन के शुरु होने से पूरे इलाके में भूकंप जैसा हलचल मच जाता है। परानपुर की धरती पर लैण्ड सर्वे क्या शुरु होता है गांव के बच्चे–बच्चे भी बाउण्डी, मुख्बा, किश्तकार, खानपुरी, तकाजा, तसदीक, दफा तीन, छह, नौ आदि जमीनी जानकारियां हासिल करने लगते हैं। वहां के लोग अपनी–अपनी जमीन को लेकर तनाव में उलझ जाते हैं। जमीन पर अपने–अपने हक को

लेकर बाप–बेटे, भाई–भाई का प्यार–विश्वास खत्म होने लगता है। गांव के जमींदारों, इज्जतदारों, अधिकारियों के पास गांव के बुजुर्ग लोग, औरतें, किसान लोग अपने–अपने नाबालिग बच्चों की उंगलियां पकड़कर गुहार लगाने लगते हैं। हुजूर देखा जाय।..... .जरा इनसाफ किया जाए हुजूर। इसका बाप कमाते– कमाते मर गया। कोल्हू के बैल की तरह सारी जिन्दगी खटते–खटते बीती और खाते में कहीं भी उनका नाम नहीं। नाम दर्ज कर दिया जाय हुजूर।''[7]

पूरा गांव देखते ही देखते मुकदमेबाजी का गढ़ बन जाता है। पूरा गांव अनेक इकाइयों में बंट गया है। गांव की एकता–अखण्डता ध्वस्त हो गई है। गांव के साथ ही साथ परिवार की आत्मीयता भी खत्म होने लगी है। परिवार के सदस्यों के बीच दुश्मनी पनपने लगती है। जमीन–जायदाद को लेकर परिवार बिखरने लगता है। एक ही जमीन पर परिवार के कई सदस्य अपनी दावेदारी पेश करने लगते हैं। गांव में सेटलमेन्ट अधिकारी की अदालत में गुहार लगाते हुए लोग कहते हैं–''माननीय जज साहब! इजंक्शन की कार्यवाई को मंजूर करें। बाप ने प्रार्थना की है कि वह सम्मिलित परिवार का कर्ता होकर अभी भी जीवित है। सम्मिलित परिवार की आमदनी के पैसे से उसके लड़के ने जमीन खरीदी सब अपने नाम से। अब एक धूर जमीन भी नहीं देना चाहता उसका बेटा। गुजारिश है.... ।[8]

'परती परिकथा' स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय ग्राम जीवन की मार्मिक लिपि है। 'मैला आंचल' हमें मेरीगंज ही नहीं पूरे पूर्णिया आंचल के मैलेपन से साक्षातकार कराता है तो 'परती परिकथा' उस अंचल विशेष के प्रगतिशील कार्यक्रमों–आन्दोलनों से रूबरू कराता है। आजादी के बाद के युगान्तकारी परिवर्तनों से गाम जीवन में आए भारी बदलाव एवं चुनौतियों का यहां दर्शन होता है। आजादी के बाद कई ग्रामोन्मुखी योजनाएं क्रियान्वित हुईं। इस सम्बन्ध में डॉ. विवेकी रॉय का कथन गौरतलब है–''भारतीय जीवन के परिप्रेक्ष्य में इस ग्राम जीवन के अभूतपूर्व परिवर्तन के प्रथम दशकीय नवोल्लास और चुनौतियों के संकेत और समग्र साक्षात्कार की प्रतिभा लेकर फणीश्वरनाथ रेणु का स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में अवतरण सही अर्थों में युगान्तर उपस्थित करता है।''[9]

निष्कर्ष– हमारे देश के ये गांव विशेष आजादी के बाद आधुनिक सभ्यता के प्रभाव से कुछ हद तक विकसित तो हुए हैं, पर सांस्कृतिक अस्मिता खो बैठे हैं। आधुनिक भारत–निर्माण के नाम पर गांव की कायापलट का जो उपक्रम किया गया उससे गांव की आत्मिक अस्मिता क्षतिग्रस्त हुई है। आजादी के बाद देश में जनतंत्र की मजबूती के लिए आम चुनाव, जन हितैषी कार्यक्रम, विकासोन्मुखी योजनाओं के कार्यान्वयन से देश की किस्मत जागने के बजाय बद किस्मती ने देश को चारो तरफ से घेर लिया है। भ्रष्टाचार, घुसखोरी, अनैतिकता, स्वार्थपरता आदि अमानवीय तत्वों ने देश को अपने आगोश में ले लिया। रेणु जी के ये दोनों उपन्यास देश के बिगड़े हुए हालात को सुधारने का संकल्प पाठकों में दर्ज कराते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मैला आंचल – फणीश्वरनाथ रेणु, प्रथम संस्करण की भूमिका
2. मैला आंचल – फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ –25–26
3. मैला आंचल – फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ –55
4. मैला आंचल – फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ– 312
5. हिन्दीउपन्यास– शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ–45
6. नागरी पत्रिका–डॉ. विवेकी रॉय, जून 1979, पृष्ठ–06
7. परती परिकथा –फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ– 28
8. परती परिकथा– फणीश्वरनाथ रेणु पृष्ठ– 320–321
9. हिन्दी उपन्यास उत्तरशती की उपलब्धियां– डॉ. विवेकी रॉय, पृष्ठ– 02